महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

बी.ए. द्वितीय वर्ष (सेमेस्टर-IV) परीक्षा, जून-2025 (नियमित)

विषय: राजस्थान का इतिहास (HISTORY OF RAJASTHAN)

पूर्णांक: 70 समय: 3 घंटे

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के दो भाग हैं: भाग-अ और भाग-ब।
2. भाग-अ के सभी दस प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 50 शब्दों में दीजिए। (10 x 2 = 20 अंक)
3. भाग-ब में कुल दस प्रश्न हैं। किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक इकाई से कम-से-कम एक प्रश्न का चयन करना अनिवार्य है। उत्तर सीमा 400 शब्दों से अधिक। (5 x 10 = 50 अंक)

भाग-अ (अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न) (20 अंक)

(उत्तर सीमा: अधिकतम 50 शब्द प्रति प्रश्न)

1. कालीबंगा सभ्यता के प्रमुख दो साक्ष्य (Findings) क्या हैं?
2. गुर्जर-प्रतिहार वंश के किन्हीं दो महत्वपूर्ण शासकों के नाम लिखिए।
3. पृथ्वीराज चौहान तृतीय द्वारा लड़े गए दो प्रमुख युद्धों का उल्लेख कीजिए।
4. हल्दीघाटी युद्ध के कारणों को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
5. बीकानेर के किस शासक ने मुगल सम्राट अकबर के अधीनता स्वीकार की और क्यों?
6. 1857 की क्रांति के समय राजस्थान में स्थापित किन्हीं दो ब्रिटिश छावनियों के नाम बताइए।
7. बिजोलिया किसान आंदोलन के प्रमुख नेता कौन थे और इसका मुख्य कारण क्या था?
8. 'सेवा संघ' की स्थापना किसने की और इसका उद्देश्य क्या था?
9. राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलन के किन्हीं दो उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए।
10. राजस्थान के एकीकरण के प्रथम चरण का नाम और उसकी राजधानी क्या थी?

भाग-ब (निबंधात्मक/दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) (50 अंक)

(किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए, प्रत्येक इकाई से कम-से-कम एक प्रश्न अनिवार्य। उत्तर सीमा: 400 शब्दों से अधिक)

इकाई-I: प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन राजस्थान

1. गुर्जर-प्रतिहारों की सांस्कृतिक उपलब्धियों पर एक विस्तृत निबंध लिखिए। कन्नौज के त्रिकोणीय संघर्ष में उनकी भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।
2. राजस्थान के प्राचीन पुरातात्विक स्थलों (जैसे- आहड़, गणेश्वर, बैराठ) के महत्व का वर्णन कीजिए। वे राजस्थान की इतिहास लेखन में किस प्रकार योगदान देते हैं?

इकाई-II: मध्यकालीन राजस्थान और मुगल संबंध

3. मेवाड़ के इतिहास में महाराणा सांगा के योगदान और उपलब्धियों का विस्तृत विश्लेषण कीजिए।
4. अकबर की राजपूत नीति (Rajput Policy) का विस्तृत विश्लेषण कीजिए। इस नीति के परिणामों का मूल्यांकन कीजिए।
5. वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप द्वारा मुगलों के विरुद्ध किए गए संघर्ष की विवेचना कीजिए।

इकाई-III: आधुनिक राजस्थान और स्वतंत्रता संग्राम

6. राजस्थान में 1857 की क्रांति के विस्तार, प्रकृति और असफलता के कारणों पर एक आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए।
7. ब्रिटिश-राजपूत संधियाँ (Treaties of 1818) किन परिस्थितियों में हुई? इन संधियों के राजस्थान की रियासतों पर पड़े दीर्घकालिक प्रभावों का मूल्यांकन कीजिए।
8. राजस्थान में किसान और आदिवासी आंदोलनों (जैसे- बिजोलिया, बेगूं, भगत आंदोलन) के स्वरूप एवं परिणामों पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

इकाई-IV: स्वतंत्रता संग्राम, प्रजामंडल और एकीकरण

9. राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलन के उदय के कारणों का वर्णन कीजिए। राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भूमिका और योगदान का विस्तृत मूल्यांकन कीजिए।
10. राजस्थान के एकीकरण (Integration) की प्रक्रिया का विस्तृत विवरण दीजिए। इस प्रक्रिया में सरदार वल्लभ भाई पटेल और वी.पी. मेनन की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

मॉडल प्रश्न-पत्र के विस्तृत उत्तर और विश्लेषण

भाग-अ के उत्तर (अति लघु उत्तरात्मक)

1. **कालीबंगा सभ्यता के प्रमुख दो साक्ष्य (Findings) क्या हैं?** कालीबंगा (हनुमानगढ़) से प्राप्त दो प्रमुख साक्ष्य हैं: (1) विश्व के प्राचीनतम जुते हुए खेत के प्रमाण, जो प्राक्-हड़प्पा काल से संबंधित हैं और ग्रिड पैटर्न में हैं। (2) सात आयताकार अग्नि वेदिकाएँ (अग्नि कुंड), जो संभवतः बलि या धार्मिक अनुष्ठानों के लिए उपयोग की जाती थीं और धार्मिक जीवन की ओर संकेत करती हैं।
2. **गुर्जर-प्रतिहार वंश के किन्हीं दो महत्वपूर्ण शासकों के नाम लिखिए।** (1) नागभट्ट प्रथम (730-760 ई.): इस वंश का वास्तविक संस्थापक, जिसने अरबों को सिंध से आगे बढ़ने से सफलतापूर्वक रोका और उज्जैन को अपनी राजधानी बनाया। (2) मिहिरभोज (भोज प्रथम) (836-885 ई.): सबसे प्रतापी शासक, जिसके साम्राज्य की सीमाएं हिमालय से नर्मदा तक और पूर्वी बंगाल तक विस्तृत थीं। उसने आदि-वराह की उपाधि धारण की।
3. **पृथ्वीराज चौहान तृतीय द्वारा लड़े गए दो प्रमुख युद्धों का उल्लेख कीजिए।** पृथ्वीराज चौहान तृतीय द्वारा लड़े गए दो प्रमुख युद्ध हैं: (1) तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.), जिसमें उसने मुहम्मद गौरी को पराजित किया और (2) तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.), जिसमें गौरी ने पृथ्वीराज को पराजित किया, जिसने भारत में तुर्की शासन की नींव रखी।
4. **हल्दीघाटी युद्ध के कारणों को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।** हल्दीघाटी युद्ध (1576 ई.) का प्राथमिक कारण महाराणा प्रताप द्वारा मुगल सम्राट अकबर की संप्रभुता को अस्वीकार करना था। प्रताप मेवाड़ की स्वतंत्रता और राजपूत गौरव के प्रतीक थे, जबकि अकबर पूरे भारत को एकछत्र शासन (A Single Empire) के अधीन लाना चाहता था।
5. **बीकानेर के किस शासक ने मुगल सम्राट अकबर के अधीनता स्वीकार की और क्यों?** बीकानेर के शासक राव कल्याणमल ने 1570 ई. में नागौर दरबार में अकबर की अधीनता स्वीकार की। कारण था आंतरिक संघर्षों से सुरक्षा और मुगल संरक्षण प्राप्त करके अपने राज्य को जैसलमेर और जोधपुर के संभावित खतरों से बचाना, साथ ही अपनी सत्ता को मजबूत करना।
6. **1857 की क्रांति के समय राजस्थान में स्थापित किन्हीं दो ब्रिटिश छावनियों के नाम बताइए।** (1) नसीराबाद (Nasirabad): अजमेर के निकट स्थित सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण छावनी, जहां 28 मई 1857 को क्रांति का सूत्रपात हुआ। (2) नीमच (Neemuch): यह छावनी 3 जून 1857 को विद्रोह का केंद्र बनी थी, यह तात्कालिक रूप से मेवाड़ पॉलिटिकल एजेंसी के अधीन थी।
7. **बिजोलिया किसान आंदोलन के प्रमुख नेता कौन थे और इसका मुख्य कारण क्या था?** इस आंदोलन के प्रमुख नेता साधु सीताराम दास (प्रथम चरण), विजय सिंह पथिक (द्वितीय चरण) और माणिक्य लाल वर्मा (तृतीय चरण) थे। मुख्य कारण था मेवाड़ के जागीरदार द्वारा किसानों पर लगाए गए 84 प्रकार के अत्यधिक कर (लगान), विशेषकर चंवरी कर और तलवार बंधाई कर।

8. **'सेवा संघ' की स्थापना किसने की और इसका उद्देश्य क्या था?** 'राजस्थान सेवा संघ' की स्थापना विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी और हरिभाई किंकर ने 1919 ई. में वर्धा (महाराष्ट्र) में की। उद्देश्य था रियासती जनता में राजनीतिक जागृति उत्पन्न करना, जागीरदारों के शोषण का विरोध करना और रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना।
9. **राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलन के किन्हीं दो उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए।** (1) **उत्तरदायी शासन की स्थापना:** रियासतों के राजाओं के निरंकुश और स्वेच्छाचारी शासन को समाप्त कर जनता के प्रति जवाबदेह लोकतांत्रिक 'उत्तरदायी शासन' स्थापित करना। (2) **नागरिक अधिकारों की मांग:** रियासत की जनता के लिए मौलिक अधिकार जैसे सभा करने, संगठन बनाने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की मांग करना, जो पहले दमित थे।
10. **राजस्थान के एकीकरण के प्रथम चरण का नाम और उसकी राजधानी क्या थी?** राजस्थान के एकीकरण के प्रथम चरण का नाम 'मत्स्य संघ' था, जिसका गठन 18 मार्च 1948 को हुआ था। इसमें अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली रियासतें शामिल थीं। इसकी राजधानी अलवर थी।

भाग-ब के विस्तृत उत्तर (निबंधात्मक/दीर्घ उत्तरीय)

इकाई-I: प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन राजस्थान

1. गुर्जर-प्रतिहारों की सांस्कृतिक उपलब्धियों पर एक विस्तृत निबंध लिखिए। कन्नौज के त्रिकोणीय संघर्ष में उनकी भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

I. परिचय: गुर्जर-प्रतिहारों का उदय और कालखंड

गुर्जर-प्रतिहार वंश (लगभग 8वीं शताब्दी से 11वीं शताब्दी ईस्वी) भारतीय इतिहास, विशेषकर राजस्थान के इतिहास में एक महान शक्ति था। वे न केवल राजनीतिक स्थिरता के प्रतीक थे, बल्कि अरब आक्रमणकारियों के विरुद्ध भारत के द्वारपाल के रूप में भी प्रसिद्ध थे। उनका शासन पश्चिमी भारत और बाद में कन्नौज पर केंद्रित रहा, और उनका काल कला, साहित्य और स्थापत्य का चरमोत्कर्ष था।

II. गुर्जर-प्रतिहारों की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

प्रतिहार शासकों ने धर्म, कला और ज्ञान के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे उनके काल को उत्तरी भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग कहा जाता है।

A. स्थापत्य कला और महा-मारू शैली: प्रतिहार काल में मंदिर स्थापत्य की एक विशिष्ट शैली का विकास हुआ, जिसे **महा-मारू शैली (Maha-Maru style)** या गुर्जर-प्रतिहार शैली कहा जाता है।

1. **शैलीगत विशेषताएँ:**
    - **पंचायतन शैली का प्रयोग:** कई मंदिर पंचायतन शैली (मुख्य मंदिर के साथ चार कोनों पर चार छोटे मंदिर) में निर्मित किए गए।
    - **जटिल नक्काशी:** मंदिरों की बाहरी दीवारों पर देवी-देवताओं, अप्सराओं, मिथुन दृश्यों और ज्यामितीय पैटर्न की अत्यंत जटिल और बारीक नक्काशी की गई।
    - **विशाल शिखर:** मंदिरों का शिखर ऊँचा, घुमावदार और कई मंडपों वाला होता था, जो उन्हें दूर से ही भव्यता प्रदान करता था।
    - **मंडप का विकास:** सभामंडप और अंतराल (Vestibule) के साथ गर्भगृह का स्पष्ट विभाजन होता था।
2. **प्रमुख स्थापत्य केंद्र:**
    - **ओसियाँ (जोधपुर):** यह प्रतिहार स्थापत्य का एक प्रमुख केंद्र था। यहां **सूर्य मंदिर, सच्चिया माता मंदिर** और जैन मंदिर समूह स्थित हैं, जो प्रतिहार कला की परिपक्वता को दर्शाते हैं।
    - **आभानेरी (दौसा):** यहां का **हर्षत माता मंदिर** प्रतिहार कला का एक सुंदर उदाहरण है, जिसमें जटिल नक्काशीदार स्तंभ और हिंदू देवी की भव्यता दिखाई देती है।

- किराडू (बाड़मेर): 'राजस्थान का खजुराहो' कहे जाने वाले किराडू के मंदिर (विशेषकर सोमेश्वर मंदिर) प्रतिहारों के बाद की सोलंकी-मारू शैली का संक्रमण दिखाते हैं।
- ग्वालियर (मध्य प्रदेश): मिहिरभोज द्वारा निर्मित विष्णु को समर्पित मंदिर इस काल के स्थापत्य को दर्शाता है।

B. साहित्य और ज्ञान का संरक्षण: प्रतिहार शासक विद्या के संरक्षक थे और उनके दरबार में कई महान कवि और नाटककार हुए।

1. राजशेखर का योगदान: राजशेखर (जिन्हें यायावर भी कहा जाता था) गुर्जर-प्रतिहार शासक महेंद्रपाल प्रथम (885-910 ई.) और उसके पुत्र महिपाल के गुरु और राजकवि थे।
    - प्रमुख रचनाएँ: *कर्पूरमंजरी* (प्राकृत भाषा में प्रसिद्ध नाटक), *काव्यमीमांसा* (साहित्य सिद्धांत और काव्यशास्त्र पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथ), *विद्धशालभंजिका*, *बाल रामायण* और *बाल भारत*। राजशेखर की रचनाएँ उस काल की साहित्यिक समृद्धि को दर्शाती हैं।
2. अन्य साहित्यिक विकास: जैन साहित्य का भी इस काल में विकास हुआ। नागभट्ट प्रथम और मिहिरभोज को भी साहित्य के संरक्षक के रूप में याद किया जाता है।

C. मूर्तिकला और धातु कला: प्रतिहार मूर्तिकला गुप्तकालीन आदर्शों से प्रेरित थी लेकिन इसमें क्षेत्रीय प्रभाव और अलंकरण की अधिकता थी। मूर्तियां धार्मिक विषयों (विष्णु, शिव, शक्ति और सूर्य) पर केंद्रित थीं, जिनमें सुंदरता और आध्यात्मिक भाव का संतुलन था। ओसियाँ की मूर्तियाँ और कांस्य की मूर्तियां इस कला की उत्कृष्ट मिसालें हैं।

III. कन्नौज के त्रिकोणीय संघर्ष में गुर्जर-प्रतिहारों की भूमिका का मूल्यांकन

A. संघर्ष का कारण (780-920 ई.): कन्नौज (वर्तमान उत्तर प्रदेश) पर नियंत्रण स्थापित करना तीनों शक्तियों—गुर्जर-प्रतिहार (उत्तर), पाल (पूर्व) और राष्ट्रकूट (दक्कन)—के लिए राजनीतिक गौरव और उत्तर भारत के विशाल उपजाऊ मैदानों और व्यापार मार्गों पर नियंत्रण का प्रतीक था।

B. प्रतिहारों की निर्णायक सफलता:

1. प्रारंभिक प्रयास (वत्सराज): प्रतिहार शासक वत्सराज ने (775-805 ई.) सर्वप्रथम कन्नौज पर आक्रमण किया और पाल शासक धर्मपाल को पराजित किया। हालांकि, वह तुरंत ही दक्कन के राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हो गए।
2. नागभट्ट द्वितीय (805-833 ई.): नागभट्ट द्वितीय को त्रिकोणीय संघर्ष में सफलता का श्रेय दिया जाता है।
    - उसने कन्नौज के शासक चक्रायुध को निर्णायक रूप से पराजित किया।
    - उसने कन्नौज पर अधिकार किया और उसे अपनी स्थायी राजधानी बनाकर प्रतिहारों की शक्ति को उत्तर भारत में स्थापित किया।
3. चरमोत्कर्ष (मिहिरभोज प्रथम): मिहिरभोज का काल प्रतिहारों के लिए 'साम्राज्यवादी चरमोत्कर्ष' का था। उसने पाल शासकों (देवपाल और महेंद्रपाल) और राष्ट्रकूटों को बार-बार पराजित किया।
    - अरब यात्री सुलेमान (851 ई.) ने मिहिरभोज को 'अरबों का कट्टर शत्रु' कहा और उसके राज्य को भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य बताया।
    - मिहिरभोज ने कन्नौज से एक विशाल साम्राज्य का सफलतापूर्वक शासन किया, जो कश्मीर से नर्मदा और सिंध से बंगाल तक विस्तृत था।

C. मूल्यांकन: गुर्जर-प्रतिहारों की भूमिका त्रिकोणीय संघर्ष में निर्णायक थी। उन्होंने न केवल इस संघर्ष को शुरू किया बल्कि अंततः इसे जीतकर उत्तर भारत में एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित किया। उनकी सफलता के कारण ही 10वीं शताब्दी तक कन्नौज पर प्रतिहारों का एकछत्र नियंत्रण रहा। यह नियंत्रण भारत में राजनीतिक एकता और स्थिरता का प्रतीक बना, जब तक कि महमूद गजनवी के आक्रमणों ने 11वीं शताब्दी में उनके पतन को सुनिश्चित नहीं कर दिया।

IV. निष्कर्ष: गुर्जर-प्रतिहारों का योगदान केवल सैन्य विजय तक सीमित नहीं था। उनके शासनकाल में महा-मारू शैली का अद्भुत स्थापत्य, राजशेखर जैसे महान विद्वानों का संरक्षण और अरबों के विरुद्ध सुरक्षात्मक दीवार का निर्माण, भारतीय इतिहास, विशेष रूप से राजस्थान के इतिहास को एक स्थायी गौरव प्रदान करता है।

इकाई-II: मध्यकालीन राजस्थान और मुगल संबंध

4. अकबर की राजपूत नीति (Rajput Policy) का विस्तृत विश्लेषण कीजिए। इस नीति के परिणामों का मूल्यांकन कीजिए।

I. परिचय: नीति की आवश्यकता और पृष्ठभूमि

मुगल सम्राट जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर (1556-1605 ई.) का सिंहासनारोहण एक नाजुक दौर में हुआ था। दिल्ली सल्तनत और शुरुआती मुगलों का शासन राजपूतों के निरंतर प्रतिरोध के कारण अस्थिर रहा था। अकबर ने यह महसूस किया कि भारत में स्थायी साम्राज्य स्थापित करने के लिए राजपूतों को शत्रु मानने के बजाय, उन्हें **सहकर्मी और सहयोगी** बनाना आवश्यक है। उसकी यह नीति केवल राजनीतिक नहीं थी, बल्कि इसमें गहरी सामाजिक और धार्मिक दूरदर्शिता भी थी।

II. अकबर की राजपूत नीति के मूल तत्व (The Core Principles)

अकबर की राजपूत नीति **भेदभाव और सम्मान** के सिद्धांत पर आधारित थी, जिसने बल, कूटनीति और सहिष्णुता का मिश्रण किया।

A. वैवाहिक संबंध और गठबंधन: यह नीति का सबसे महत्वपूर्ण और शांतिपूर्ण पहलू था।

1. **आमेर (1562 ई.):** अकबर ने अपनी अजमेर यात्रा के दौरान, आमेर के शासक **भारमल (बिहारीमल)** से संपर्क किया। भारमल ने अकबर की अधीनता स्वीकार की और अपनी पुत्री **हरका बाई (जोधा बाई)** का विवाह अकबर से किया। यह पहला प्रमुख वैवाहिक गठबंधन था जिसने मुगल-राजपूत संबंधों को एक नई दिशा दी।
2. **उद्देश्य:** वैवाहिक संबंध केवल राजनीतिक गठबंधन नहीं थे, बल्कि इनसे राजपूतों को मुगल दरबार में स्थायी और विश्वसनीय स्थान मिला। इन रानियों को मुगल दरबार में सम्मान और धार्मिक स्वतंत्रता मिली।
3. **अन्य उदाहरण:** जैसलमेर के राव हरराय भाटी और बीकानेर के राव कल्याणमल ने भी 1570 ई. के नागौर दरबार में अधीनता स्वीकार कर वैवाहिक संबंध स्थापित किए।

B. उच्च पदों पर नियुक्तियाँ और मनसबदारी: यह नीति का सबसे रणनीतिक तत्व था।

1. **मनसबदारी प्रणाली:** अधीनता स्वीकार करने वाले राजपूत राजाओं को मुगल मनसबदारी प्रणाली में उच्च पद और जागीरें प्रदान की गईं। उन्हें केवल सामंत नहीं, बल्कि साम्राज्य के महत्वपूर्ण स्तंभ बनाया गया।
2. **शक्तिशाली कमांडर:** राजा **भगवान दास** (आमेर) और उनके पुत्र **मान सिंह** को साम्राज्य के प्रमुख सूबेदारों और जनरलों के रूप में नियुक्त किया गया। मान सिंह ने अकबर के सबसे भरोसेमंद सेनापति के रूप में काम किया और उसे 7000 का सर्वोच्च मनसबदार (अजीजों को छोड़कर) बनाया गया।
3. **समानता का भाव:** राजपूतों को साम्राज्य की प्रशासनिक और सैन्य निर्णय लेने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाकर, अकबर ने उन्हें 'पराया' महसूस नहीं होने दिया।

C. धार्मिक सहिष्णुता (Religious Tolerance): राजपूतों का विश्वास जीतने के लिए, अकबर ने हिंदुओं के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई:

1. **जजिया और तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति:** 1563 ई. में तीर्थ यात्रा कर और 1564 ई. में **जजिया कर** (गैर-मुस्लिमों पर धार्मिक कर) की समाप्ति की गई, जिससे राजपूतों में यह विश्वास कायम हुआ कि अकबर उनके धर्म का सम्मान करता है।
2. **पूजा की स्वतंत्रता:** राजपूत रानियों को उनके महलों में पूजा-पाठ करने की पूर्ण स्वतंत्रता मिली, जिसने सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा दिया।

D. बल का प्रयोग: यह नीति का 'अंतिम उपाय' था। जो शासक किसी भी शर्त पर अधीनता स्वीकार नहीं करते थे, अकबर ने उनके विरुद्ध सैन्य शक्ति का प्रयोग किया।

1. **मेवाड़:** यह नीति का सबसे बड़ा अपवाद था। महाराणा उदय सिंह और महाराणा प्रताप ने अंतिम क्षण तक मुगलों की संप्रभुता को अस्वीकार किया, जिसके परिणामस्वरूप **चित्तौड़ का घेराव (1568)** और **हल्दीघाटी का युद्ध (1576)** हुआ।

III. राजपूत नीति के दूरगामी परिणाम

अकबर की राजपूत नीति के परिणाम केवल मुगल साम्राज्य तक सीमित नहीं थे, बल्कि इन्होंने भारतीय राजनीति और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला।

A. मुगल साम्राज्य पर प्रभाव:

1. **साम्राज्य का स्थायित्व और विस्तार:** राजपूतों की वफादारी, बहादुरी और सैन्य कौशल ने मुगल साम्राज्य को अभूतपूर्व सैन्य शक्ति और राजनीतिक स्थिरता प्रदान की। राजपूतों ने मेवाड़ को छोड़कर पूरे उत्तर भारत को एक राजनीतिक इकाई में बांधने में मदद की।
2. **राजकोषीय लाभ:** निरंतर युद्धों की आवश्यकता कम हुई, जिससे राजकोष पर बोझ कम हुआ और व्यापार तथा कृषि को बढ़ावा मिला।
3. **जनता का समर्थन:** राजपूतों के सहयोग से मुगल शासन को हिंदू जनता का व्यापक समर्थन मिला, जिससे मुगल सत्ता की नींव और गहरी हुई।
4. **सांस्कृतिक संश्लेषण:** मुगल और राजपूत कला, स्थापत्य, संगीत, वेशभूषा और साहित्य का समन्वय हुआ, जिसने एक नई हिन्द-इस्लामी संस्कृति को जन्म दिया।

B. राजपूतों और राजस्थान पर प्रभाव:

1. **उच्च सामाजिक-राजनीतिक स्थिति:** राजपूतों ने अपनी क्षेत्रीय स्वायत्तता बनाए रखते हुए, मुगल दरबार में प्रतिष्ठा और उच्च पद प्राप्त किए। वे केवल स्थानीय शासक नहीं रहे, बल्कि एक अखिल भारतीय शक्ति के सहभागी बन गए।
2. **आर्थिक समृद्धि:** राजपूत शासकों को जागीरें और मनसबदारी के कारण विशाल राजस्व प्राप्त हुआ, जिससे उनकी आर्थिक समृद्धि बढ़ी।
3. **कला और स्थापत्य का मिश्रण:** आमेर, बीकानेर और जोधपुर जैसे स्थानों पर बने महलों में राजपूत और मुगल स्थापत्य शैलियों का सुंदर मिश्रण देखा जा सकता है।

IV. नीति का आलोचनात्मक मूल्यांकन

आलोचक मानते हैं कि यह नीति अकबर के व्यक्तिगत सद्भाव से अधिक **साम्राज्यवादी अनिवार्यता** का परिणाम थी। यह एक **व्यावहारिक समझौता** था, जिसका उद्देश्य मुगल शासन को मजबूत करना था।

- **मेवाड़ का अपवाद:** इस नीति की सबसे बड़ी सीमा यह थी कि यह मेवाड़ के गौरव को नहीं जीत सकी। महाराणा प्रताप का प्रतिरोध अकबर की नीति को सार्वभौमिक सफलता प्राप्त करने से रोकता रहा।
- **अधीनता की शर्त:** मित्रता की पेशकश केवल तभी की गई जब राजपूत शासकों ने मुगल संप्रभुता को स्वीकार किया। जो सहमत नहीं हुए, उन्हें दबा दिया गया।

V. निष्कर्ष: अकबर की राजपूत नीति भारत में मुस्लिम और हिंदू शक्तियों के बीच संबंध स्थापित करने का सबसे सफल मॉडल थी। यह मुगल साम्राज्य की महानता का आधार बनी और इसने मध्यकाल में राजस्थान के इतिहास की दिशा को हमेशा के लिए बदल दिया, जिससे राजपूत शक्ति का विघटन होने के बजाय, उन्हें एक बड़ी राजनीतिक व्यवस्था में सम्मानजनक स्थान मिला।

इकाई-III: आधुनिक राजस्थान और स्वतंत्रता संग्राम

6. राजस्थान में 1857 की क्रांति के विस्तार, प्रकृति और असफलता के कारणों पर एक आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए।

I. परिचय: क्रांति की पृष्ठभूमि और राजनीतिक व्यवस्था

1857 का विद्रोह भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध पहला बड़ा सशस्त्र संघर्ष था। राजस्थान में, इस क्रांति की पृष्ठभूमि 1818 ई. की संधियों में निहित थी, जिसके तहत राजपूत रियासतें ब्रिटिश संरक्षण के अधीन आ गईं। ब्रिटिश सरकार ने इन राज्यों में पॉलिटिकल एजेंट (P.A.) नियुक्त किए और छह सैनिक छावनियां स्थापित कीं। क्रांति के समय, राजस्थान में ए.जी.जी. (एजेंट टू गवर्नर जनरल) जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस थे।

II. क्रांति का विस्तार और प्रमुख केंद्र

राजस्थान में क्रांति की शुरुआत 28 मई 1857 को हुई और यह छह प्रमुख ब्रिटिश छावनियों में से चार में फैली।

1. **नसीराबाद (28 मई 1857):**

- कारण: बंगाल इन्फैंट्री के सैनिकों में संदेह था कि उनकी 15वीं पलटन को अजमेर से नसीराबाद इसलिए भेजा गया है, क्योंकि वे विद्रोह कर सकते हैं।
- घटनाक्रम: 15वीं और 30वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री के सैनिकों ने विद्रोह किया, छावनी लूटी और अपने अधिकारियों (मेजर स्पोटिसवुड, कर्नल न्यूबरी) को मार डाला। उन्होंने ब्यावर और खेरवाड़ा छावनी के सैनिकों के शांत रहने के कारण दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।

2. नीमच (3 जून 1857):
   - घटनाक्रम: मोहम्मद अली बेग के नेतृत्व में सैनिकों ने विद्रोह किया। उन्होंने छावनी को जलाया और ब्रिटिश परिवारों को भागने पर मजबूर किया, जिन्हें बाद में मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह की सहायता से उदयपुर में शरण मिली।
3. कोटा (15 अक्टूबर 1857):
   - प्रकृति: यह राजस्थान का सबसे सुनियोजित और व्यापक जन-विद्रोह था।
   - नेतृत्व: वकील जयदयाल और रिसालदार मेहराब खान ने नेतृत्व किया।
   - घटनाक्रम: विद्रोहियों ने पॉलिटिकल एजेंट मेजर बर्टन और उसके दो पुत्रों की हत्या कर दी। कोटा महाराव राम सिंह द्वितीय को अपने महल में नजरबंद कर दिया। विद्रोहियों ने लगभग छह महीने तक कोटा शहर पर नियंत्रण बनाए रखा, जिसे अंततः जनरल रॉबर्ट्स ने करौली की सेना की सहायता से दबाया।
4. आउवा (पाली) का संघर्ष:
   - नेतृत्व: मारवाड़ के जागीरदार ठाकुर कुशाल सिंह चंपावत ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया।
   - महत्वपूर्ण युद्ध:
     - बिथोड़ा का युद्ध (8 सितंबर): कुशाल सिंह ने जोधपुर राज्य की सेना (ओनार सिंह) और कैप्टन हीथकोट की ब्रिटिश सेना को हराया।
     - चेलवास का युद्ध (18 सितंबर): कुशाल सिंह ने जोधपुर के पॉलिटिकल एजेंट मैकमोहन को पराजित कर मार डाला और उसका सिर आउवा के किले पर लटका दिया, जिससे विद्रोहियों का मनोबल अभूतपूर्व रूप से बढ़ा।

III. क्रांति की प्रकृति (Nature of the Revolt)

राजस्थान में 1857 की क्रांति को केवल सैनिक विद्रोह कहना अपूर्ण है। इसकी प्रकृति मिश्रित थी:

1. जन-विद्रोह: कोटा और आउवा जैसे स्थानों पर यह केवल सैनिकों तक सीमित नहीं था, बल्कि स्थानीय जनता, विशेषकर भील और मीणा समुदायों ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया।
2. सामंत-विद्रोह (Feudal Resistance): अनेक जागीरदार (जैसे आउवा के ठाकुर) अंग्रेजों और उनके अधीन राजपूत शासकों की नीतियों से असंतुष्ट थे, इसलिए उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोहियों का समर्थन किया।
3. सत्ता विरोधी विद्रोह: कोटा में विद्रोहियों ने अपने ही शासक महाराव राम सिंह द्वितीय के विरुद्ध भी कार्रवाई की, क्योंकि वे उन्हें अंग्रेजों का समर्थक मानते थे।

IV. क्रांति की असफलता के कारण (Reasons for Failure) - आलोचनात्मक विश्लेषण

राजस्थान में क्रांति के सफल न होने के पीछे गंभीर संरचनात्मक और राजनीतिक कमियाँ थीं:

1. स्थानीय शासकों का सहयोग:
   - सबसे बड़ा कारण: राजस्थान के अधिकांश राजपूत शासकों (जैसे जयपुर के राम सिंह II, जोधपुर के तख्त सिंह, उदयपुर के स्वरूप सिंह) ने अंग्रेजों का खुलकर समर्थन किया। उन्होंने विद्रोहियों का दमन करने के लिए अंग्रेजों को सैन्य और आर्थिक सहायता प्रदान की। यदि ये शासक विद्रोहियों का साथ देते, तो अंग्रेजों का राजस्थान से टिक पाना असंभव था।
2. समन्वय और केंद्रीकृत नेतृत्व का अभाव:
   - क्रांति विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग समय पर भड़की। विद्रोहियों के बीच कोई केंद्रीय नेतृत्व या समन्वय समिति नहीं थी। एक छावनी के सैनिक दूसरी छावनी के सैनिकों की सहायता के लिए तत्पर नहीं थे (नसीराबाद के विद्रोहियों ने

दिल्ली की राह ली, जबकि कोटा में भीषण जन-विद्रोह हुआ)।

3. निश्चित उद्देश्यों का अभाव:
    - विद्रोहियों का एकमात्र साझा उद्देश्य अंग्रेजों को बाहर निकालना था। इसके बाद की कोई स्पष्ट योजना नहीं थी—सत्ता किसे सौंपी जाएगी, किस प्रकार का शासन स्थापित होगा—इस पर कोई सहमति नहीं थी।
4. सीमित संसाधन और परंपरागत हथियार:
    - विद्रोहियों के पास आधुनिक हथियार, गोला-बारूद और प्रशिक्षित सेना का घोर अभाव था। वे मुख्य रूप से पारंपरिक हथियारों से लड़ रहे थे, जबकि ब्रिटिश सेना बेहतर हथियारों, संचार (तार) और रसद (रसद) से सुसज्जित थी।
5. ए.जी.जी. और पी.ए. की कूटनीति:
    - ए.जी.जी. जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस और अन्य पॉलिटिकल एजेंट (जैसे मेवाड़ में शावर्स) ने कूटनीति का उपयोग करते हुए शासकों को अपने पक्ष में बनाए रखा और विद्रोह को अलग-थलग करने में सफल रहे।

V. निष्कर्ष: 1857 की क्रांति राजस्थान में स्थानीय सामंतों के असंतोष, ब्रिटिश नीतियों के विरोध और जनता की भागीदारी का एक शक्तिशाली मिश्रण थी। यह असफल रही क्योंकि शासकों ने अपनी रियासत की स्वतंत्रता से अधिक ब्रिटिश संरक्षण को महत्व दिया। हालांकि, इस क्रांति ने राजस्थान की जनता में ब्रिटिश शासन और सामंतवादी शोषण के विरुद्ध भविष्य के आंदोलनों (किसान, प्रजामंडल) के लिए जागृति और राजनीतिक चेतना का बीज बोया, जो आधुनिक राजस्थान के निर्माण का आधार बनी।

इकाई-IV: स्वतंत्रता संग्राम, प्रजामंडल और एकीकरण

9. राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलन के उदय के कारणों का वर्णन कीजिए। राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भूमिका और योगदान का विस्तृत मूल्यांकन कीजिए।

I. परिचय: प्रजामंडल आंदोलन का अर्थ और कालखंड

प्रजामंडल आंदोलन (1938-1949 ई.) ब्रिटिश भारत के विपरीत, देशी रियासतों में चलाए गए जन-आंदोलन थे। इन आंदोलनों का मुख्य लक्ष्य रियासती शासकों के निरंकुश शासन को समाप्त करके उत्तरदायी शासन (Responsible Government) की स्थापना करना था, ताकि जनता को उनके नागरिक और राजनीतिक अधिकार मिल सकें।

II. प्रजामंडल आंदोलन के उदय के प्रमुख कारण

प्रजामंडल के उदय के पीछे रियासती शासन की संरचना, ब्रिटिश हस्तक्षेप और राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव सम्मिलित था।

A. रियासती शासन की प्रकृति और शोषण:

1. निरंकुश और स्वेच्छाचारी शासन: अधिकांश शासक ब्रिटिश संरक्षण के कारण निरंकुश और जनता के प्रति जवाबदेह नहीं थे। वे राजकोष का उपयोग अपने व्यक्तिगत ऐशो-आराम पर करते थे, जिससे जनता में गहरा असंतोष था।
2. अत्यधिक जागीरी शोषण: जागीरदारों द्वारा किसानों पर बेगार (मुफ्त श्रम), लाग-बाग (अवैध कर), और मनमाने लगान लगाए जाते थे। बिजोलिया, बेगूं और सीकर के किसान आंदोलन इसी शोषण के प्रत्यक्ष परिणाम थे।
3. न्याय और विधि का अभाव: रियासतों में कोई व्यवस्थित न्याय प्रणाली या कानून का शासन नहीं था, बल्कि शासक की इच्छा ही कानून थी।

B. नागरिक अधिकारों का अभाव: रियासतों की जनता को ब्रिटिश भारत की जनता के समान कोई नागरिक या मौलिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता, संगठन बनाने या सभा करने की स्वतंत्रता पर पूर्ण प्रतिबंध था। इस दमनकारी माहौल ने जनता को संगठित होने के लिए प्रेरित किया।

C. राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव और वैचारिक प्रेरणा:

1. कांग्रेस की प्रेरणा: महात्मा गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा चलाए जा रहे आंदोलनों (असहयोग, सविनय अवज्ञा) से राजस्थान के बुद्धिजीवी और कार्यकर्ता प्रेरित हुए। वे लोकतंत्र, स्वतंत्रता और स्वशासन की अवधारणाओं से अवगत हुए।

2. अखिल भारतीय स्तर पर संगठन: अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् (AISPC) की स्थापना (1927 ई.) ने रियासतों में आंदोलनों को एक राष्ट्रीय मंच और दिशा प्रदान की। इसने प्रजामंडलों के लिए एक वैचारिक और संगठनात्मक ढांचा तैयार किया।
3. हरिपुरा अधिवेशन (1938): कांग्रेस ने इस अधिवेशन में यह तय किया कि वह रियासतों में चल रहे आंदोलनों को नैतिक समर्थन देगी, जिससे प्रजामंडलों को एक नई गति और बल मिला।

D. बुद्धिजीवी और शिक्षित वर्ग का उदय: ब्रिटिश भारत के शहरों में शिक्षा प्राप्त करने वाले राजस्थान के युवा अब वापस लौटे और उन्होंने अपने राज्यों की पिछड़ी स्थिति को देखकर राजनीतिक सुधार की मांग शुरू कर दी।

III. राष्ट्रीय आंदोलन में प्रजामंडलों की भूमिका और योगदान (Evaluation)

प्रजामंडल आंदोलन ने रियासतों की जनता को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में दोहरे स्तर पर योगदान दिया।

A. रियासतों में लोकतंत्र की नींव:

1. उत्तरदायी शासन के लिए संघर्ष: प्रजामंडलों का प्राथमिक उद्देश्य रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना था। उन्होंने शासकों पर जनता के प्रति जवाबदेह संवैधानिक सरकार स्थापित करने के लिए निरंतर राजनीतिक दबाव बनाए रखा।
2. जनता का राजनीतिक प्रशिक्षण: प्रजामंडलों ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सभाओं, जुलूसों और रचनात्मक कार्यों के माध्यम से जनता को राजनीतिक रूप से संगठित किया। इससे जनता लोकतंत्र, नागरिक अधिकारों और राष्ट्रीय एकता के मूल्यों से परिचित हुई।
3. विरोध का आधार: प्रजामंडलों ने शासकों और जागीरदारों की मनमानी को चुनौती दी, जिससे रियासती प्रशासन की वैधता समाप्त होने लगी।

B. स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी:

1. भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में भूमिका: गांधीजी के 'भारत छोड़ो' आह्वान के जवाब में, कई प्रजामंडलों (जैसे जयपुर, मारवाड़, मेवाड़) ने 'रियासत छोड़ो आंदोलन' चलाया।
    - जयपुर: हीरालाल शास्त्री और मिर्जा इस्माइल के बीच जेंटलमैन समझौता हुआ, जिसके तहत प्रजामंडल ने आंदोलन नहीं किया लेकिन बाद में आंदोलन शुरू हुआ।
    - मेवाड़: माणिक्य लाल वर्मा के नेतृत्व में आंदोलन चला, जिससे कई नेताओं को जेल जाना पड़ा।
2. राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना: प्रजामंडलों ने रियासती शासकों के 'स्वतंत्र अस्तित्व' के तर्क को खारिज कर दिया। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि रियासतों की जनता की इच्छा भारतीय संघ में विलय की है, जिससे स्वतंत्रता के बाद एकीकरण की प्रक्रिया आसान हो गई।
3. जन-नेताओं का निर्माण: प्रजामंडलों ने ऐसे शक्तिशाली जन-नेताओं को जन्म दिया, जिन्होंने स्वतंत्र राजस्थान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
    - उदाहरण: माणिक्य लाल वर्मा (मेवाड़), गोकुल भाई भट्ट (सिरोही), जयनारायण व्यास (जोधपुर), हीरालाल शास्त्री (जयपुर) और भोगीलाल पंड्या (डूंगरपुर)।

IV. निष्कर्ष: प्रजामंडल आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक अनिवार्य कड़ी थी। इसने राजनीतिक चेतना के प्रसार, सामंती शोषण की समाप्ति और उत्तरदायी शासन की मांग के माध्यम से राजस्थान को राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्यधारा में जोड़ा। प्रजामंडलों ने ही एकीकरण के लिए लोकतांत्रिक आधार तैयार किया, जिसने सरदार पटेल के प्रशासनिक कार्य को सफल बनाने में निर्णायक योगदान दिया।

10. राजस्थान के एकीकरण (Integration) की प्रक्रिया का विस्तृत विवरण दीजिए। इस प्रक्रिया में सरदार वल्लभ भाई पटेल और वी.पी. मेनन की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

I. परिचय: एकीकरण की चुनौती

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 ने रियासतों को यह अधिकार दिया कि वे या तो भारत संघ में शामिल हों, पाकिस्तान में शामिल हों या स्वतंत्र रहें। राजस्थान में 19 रियासतें और 3 ठिकाने थे, जो आकार, भाषा और इतिहास में भिन्न थे। सरदार वल्लभ भाई पटेल और रियासती विभाग के सचिव वी.पी. मेनन ने इस जटिल कार्य को सफलतापूर्वक 8 वर्ष (18 मार्च 1948 से 1 नवंबर 1956) में 7 चरणों में पूरा किया।

II. राजस्थान के एकीकरण की सात चरण की प्रक्रिया (A Detailed Chronology)

चरण	नाम	तिथि	रियासतें/ठिकाने	विशेष चुनौतियाँ/विवरण
I	मत्स्य संघ	18 मार्च 1948	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली (A-B-C-D)	चुनौती: धौलपुर और भरतपुर के शासक भाषा के आधार पर उत्तर प्रदेश में विलय या पाकिस्तान में विलय (धौलपुर) करना चाहते थे। मेनन और पटेल ने कूटनीति से उन्हें भारत संघ में मिलाया। राजधानी: अलवर।
II	राजस्थान संघ	25 मार्च 1948	कोटा, बूंदी, झालावाड़, टोंक, किशनगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, शाहपुरा + कुशलगढ़, लावा ठिकाने।	चुनौती: कोटा के महाराव भीम सिंह ने वृहत् राजस्थान बनाने के लिए अपनी रियासत के एकीकरण का प्रयास किया। राजधानी: कोटा।
III	संयुक्त राजस्थान	18 अप्रैल 1948	राजस्थान संघ + उदयपुर (मेवाड़)	चुनौती: मेवाड़ (महाराणा भूपाल सिंह) को भारतीय संघ में शामिल करने के लिए प्रिवी पर्स (Privy Purse) और राजप्रमुख के पद का सम्मानजनक प्रस्ताव दिया गया। राजधानी: उदयपुर।
IV	वृहत् राजस्थान	30 मार्च 1949	संयुक्त राजस्थान + जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर	चुनौती: यह एकीकरण का सबसे महत्वपूर्ण चरण था, जिसे सरदार पटेल ने व्यक्तिगत रूप से संभाला। जोधपुर के हनवंत सिंह को पाकिस्तान में विलय से रोकने के लिए कूटनीति का उपयोग किया गया। 30 मार्च को राजस्थान दिवस घोषित। राजधानी: जयपुर।
V	संयुक्त वृहत् राजस्थान	15 मई 1949	वृहत् राजस्थान + मत्स्य संघ	डॉ. शंकर राव देव समिति की सिफारिश पर मत्स्य संघ का विलय वृहत् राजस्थान में किया गया।
VI	राजस्थान संघ	26 जनवरी 1950	संयुक्त वृहत् राजस्थान + सिरोही (आबू-देलवाड़ा को छोड़कर)	सिरोही का विलय किया गया, लेकिन गुजराती नेताओं के प्रभाव के कारण आबू-देलवाड़ा क्षेत्र बॉम्बे को दे दिया गया।
VII	वर्तमान राजस्थान	1 नवंबर 1956	राजस्थान संघ + अजमेर-मेरवाड़ा (केंद्र शासित प्रदेश), आबू-देलवाड़ा + सुनील-टप्पा (मंदसौर का भाग)	राज्य पुनर्गठन आयोग (SRC) की सिफारिश पर अजमेर, आबू-देलवाड़ा को राजस्थान में शामिल किया गया। राजस्थान अपने वर्तमान स्वरूप में आया।

III. सरदार वल्लभ भाई पटेल की निर्णायक भूमिका (The Architect and Visionary)

सरदार पटेल, रियासती विभाग के प्रभारी, एकीकरण के राजनीतिक और वैचारिक अगुआ थे।

1. विलय की अनिवार्यता का सिद्धांत: पटेल ने दृढ़ता से यह सिद्धांत स्थापित किया कि भारतीय संप्रभुता ब्रिटिश संप्रभुता (Paramountcy) के समाप्त होते ही भारत संघ में निहित हो जाती है, न कि रियासती शासकों में। उन्होंने रियासतों को स्वतंत्र रहने के विकल्प को खारिज कर दिया।
2. दबाव और कूटनीति का मिश्रण: उन्होंने पहले शासकों को प्रिवी पर्स और राजप्रमुख जैसे सम्मानजनक पद का वादा करके आकर्षित किया, लेकिन जब जोधपुर के हनवंत सिंह जैसे शासकों ने पाकिस्तान में शामिल होने की धमकी दी, तो पटेल ने बल और कानूनी कार्रवाई की धमकी दी।
3. वृहत् राजस्थान का निर्माण: पटेल की सबसे बड़ी उपलब्धि जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर (चार बड़ी रियासतें) का एक साथ विलय कराना था। उन्होंने इन शासकों के राजनीतिक विरोधों को व्यक्तिगत बैठकें करके और उच्च पद देकर

संतुष्ट किया।

4. **लोकप्रियता का उपयोग:** उन्होंने प्रजामंडल नेताओं (जैसे हीरालाल शास्त्री, माणिक्य लाल वर्मा) के प्रभाव का उपयोग शासकों पर दबाव बनाने के लिए किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि एकीकरण जनता की सहमति पर आधारित हो।

IV. वी.पी. मेनन की कुशल भूमिका (The Administrator and Strategist)

वी.पी. मेनन, एकीकरण प्रक्रिया के तकनीकी और प्रशासनिक क्रियान्वयनकर्ता थे, जिन्होंने पटेल के राजनीतिक उद्देश्यों को कानूनी रूप दिया।

1. **विलय पत्र (Instrument of Accession) का प्रारूपण:** मेनन ने विलय पत्र का प्रारूप तैयार किया, जिसमें शासकों को केवल रक्षा, विदेश मामले और संचार जैसे तीन विषयों पर ही संप्रभुता छोड़ने के लिए कहा गया, जिससे शासकों को अपनी आंतरिक स्वायत्तता सुरक्षित महसूस हुई।
2. **समयबद्ध क्रियान्वयन:** मेनन ने पूरी प्रक्रिया को बहुत ही कम समय में व्यवस्थित और चरणबद्ध तरीके से क्रियान्वित किया। उन्होंने सुनिश्चित किया कि एकीकरण की प्रक्रिया चरण दर चरण आगे बढ़े और जटिल कानूनी और प्रशासनिक मुद्दों को तुरंत सुलझाया जाए।
3. **विवादों का समाधान:** उन्होंने राजधानी (जयपुर बनाम उदयपुर) और राजप्रमुख के पदों को लेकर उठे क्षेत्रीय विवादों को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
4. **राज्य पुनर्गठन आयोग में पैरवी:** 1956 में अजमेर-मेरवाड़ा, आबू-देलवाड़ा को राजस्थान में शामिल कराने के लिए उन्होंने राज्य पुनर्गठन आयोग (SRC) के समक्ष राजस्थान की मजबूत पैरवी की।

V. निष्कर्ष: राजस्थान का एकीकरण सरदार वल्लभ भाई पटेल की **राजनीतिक दूरदर्शिता** और वी.पी. मेनन की **अभूतपूर्व प्रशासनिक दक्षता** का प्रमाण है। पटेल ने रियासतों के शासकों के हृदय में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना जगाई, जबकि